दुर्लभता का लगान (Scarcity Rent)

रिकार्डो के अनुसार यदि भूमि के टुकड़ों में भिन्नता नहीं हो अर्थात् इसके उपजाऊपन तथा स्थिति की दृष्टि से समान हो तथा भूमि की पूर्ति सीमित हो तो जब तक भूमि निःशुल्क या अप्रयुक्त रूप में पड़ी हो तब तक लगान का प्रश्न नहीं उठेगा पर यदि भूमि की माँग इतनी बढ़ जाय कि अब अप्रयुक्त भूमि नहीं रह जाय, फलस्वरूप अनाज की माँग में वृद्धि के कारण बाजार में प्रचलित मूल्य औसत उत्पादन लागत से अधिक होगा, और यह औसत आय तथा औसत लागत का अन्तर ही लगान होगा। इस प्रकार दुर्लभता का लगान औसत उत्पादन लागत (जिसमें लगान सम्मिलित नहीं है) के ऊपर औसत आय का वह आधिक्य है जो भूमि के गुण में एकरूपता होने के बावजूद भी भूमिपति को भूमि की पूर्ति की सीमितता के कारण प्राप्त होता है।

रिकार्डो ने उदाहरण के लिये एक ऐसे टापू को लिया जिसमें भूमि के सभी टुकड़े समान उर्वराशक्ति के हैं तथा उनकी स्थिति में कोई भिन्नता नहीं है पर उनकी पूर्ति स्थिर है तथा उनका केवल एक ही प्रयोग सम्भव है और वह है कृषि। माना कि कुछ लोग टापू पर बसने के लिये आते हैं। वे अपनी श्रम तथा पूँजी की मात्रा से भूमि पर अन्न उपजायेंगे। जब तक भूमि का पूर्ण प्रयोग नहीं हुआ रहेगा बाजार में प्रचलित अन्न का मूल्य कम

वृद्धि अल्पकालिक होगी क्योंकि सिमित पूर्ति भूमि के जोत में आयेगी और मूल्य OP को ही प्राप्त हो जायेगा। यह तब तक होता रहेगा जब तक कि सिमित भूमि जोत में रहेगी पर यदि सम्पूर्ण भूमि जोत में आ जाय तो अनाज की माँग में वृद्धि मूल्य में स्थायी वृद्धि लायेगी। मान लिया कि मूल्य OB हो जाय ऐसी स्थिति में प्रत्येक उत्पादक पूर्ति वक्र SMC के ही बिन्दु F पर उत्पादन करेगा जिससे सीमांत लागत मूल्य के बराबर हो जाय। ऐसी स्थिति में उत्पादक F बिन्दु पर साम्यस्थिति की स्थिति में होगा जहाँ सीमांत लागत OB मूल्य के बराबर होगा। उत्पादक अब OM उत्पादन करेगा। यहाँ यह स्पष्ट है कि इस स्थिति में पूँजी तथा श्रम के रूप में लगी औसत लागत तथा मूल्य (OB) के बीच अब अन्तर है। मूल्य का लागत के ऊपर यह अतिरेक ही लगान है। इस स्थिति में औसत लागत NT मूल्य NF या OB है तथा और FN - TN = TF उत्पादन की प्रति इकाई लगान है कुल लगान (HTFB) होगा। मान लिया कि जनसंख्या में और वृद्धि हो जाने के कारण माँग बढ़ जाय फलस्वरूप मूल्य बढ़कर OG या DS हो जाय तो अब उत्पादन OD होगा और प्रति इकाई लगान OG-OK= होगा। कुल लगान GST,K होगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि लगान भूमि की पूर्ति की सीमितता का परिणाम है। जिसके फलस्वरूप जैसे-जैसे मूल्य बढ़ता जायेगा -

निश्चित भूमि के अभाव में लगान बढ़ता जायेगा। स्टोनियर एवं हेग के अनुसार "दुर्लभता का लगान आवश्यक रूप से इस बात का परिणाम है कि भूमि की पूर्ति अपरिवर्तनीय है।"